www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अध्यात्म - संसार का सबसे लाभदायक व्यापार

-श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अध्यात्म-संसार का सबसे लाभदायक व्यापार

जीवात्मा के सामने दो क्षेत्र खुले पड़े हैं एक श्रेय दूसरा प्रेय। दोनों में से वह जिसे चाहे उसे प्रधान रूप से चुन सकता है। दोनों का सन्तुलन मिला सकता है। यही बुद्धिमत्ता की कसौटी है जो चुनौती की तरह पड़ी रहती है। भूलभुलैया और यथार्थता में से किसे चुना गया, इसी में जीवन लक्ष्य की—दूरदर्शिता की परीक्षा है, जो उत्तीर्ण हो जाते हैं वे अनन्त ऐश्वर्य और आनन्द प्रदान करने वाली अध्यात्म विभूतियाँ प्राप्त करते हैं—स्वर्ग और मुक्ति के अधिकारी बनते हैं। आत्म साक्षात्कार का ईश्वरीय अनुग्रह का—अजस्र शक्ति-वर्चस्व का—लाभ प्राप्त करके इस सुर दुर्लभ मानव अवतरण को धन्य बनाते हैं और जो भटक जाते हैं उन्हें चिरकाल तक पश्चात्ताप की आग में जलना पड़ता है।

भ्रम जंजाल वह है जिसमें अप्रबुद्ध प्राणी आमतौर से भटकते रहते हैं। मछली आटे की गोली पर बेतरह टूट पड़ती है, बिना आगा-पीछा सोचे उसे निगल जाती है। उस भूलका परिणाम प्राणघातक पीड़ा के रूप में सहना पड़ता है। बहेलिया जाल को ढककर दाना बिछाता है, जिन्हें सतर्कता बरतना नहीं आता वे पक्षी उन्हें खाने के लिए दौड़ पड़ते हैं, बड़ी मात्रा में—सहज ही—मनमाना आहार पाने की आतुरता उन्हें जाल में फंसा देती है और उस नादानी का फल उन्हें जान गवाँने के रूप में भुगतना पड़ता है। संपेरा मधुर ध्वनि बजाकर सांपों को बिल से बाहर निकालता है और उन्हें मोहित करके पिटारी में आजन्म कैदी बनाकर बन्द कर लेता है। हिरन की भी यही दुर्गति होती है। पुराने जमाने में बधिक वीणा की मधुर ध्वनि बजाने में प्रवीण होते थे, दौड़ते, उछलते हिरन अपनी चौकड़ी भूलकर उसे सुनने में तन्मय हो जाते थे इस अवसर का लाभ उठाकर बधिक उन्हें पकड़कर वध कर डालते थे। शोभा, सौन्दर्य पर मुग्ध होने वाले भ्रमर का कमल पुष्प में बन्द होना और फिर हाथी द्वारा उसे उदरस्थ कर लिया जाना प्रसिद्ध है। शीरे की चसक के लिये आतुर मक्खियाँ किस तरह बे-मौत मरती हैं इसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कौन नहीं जानता । ऐसी ही आसुरी माया—अवोध मानव प्राणीको भटकाती है । वह भ्रान्ति और यथार्थता के बीच अन्तर नहीं कर पाता और उसी दल दल में गहरा घुसता चला जाता है जिससे निकलने लिए यह मनुष्य मानव जैसा सुरदुर्लभ अवसर मिला था ।

सुख की आकाँक्षा जीवको स्वभावतः रहती है—अधिक पाना चाहता है । यह आकाक्षायें उचित भी हैं और आवश्यक भी । इनकी प्रेरणा से ही उत्कर्ष की दिशा में प्रगति होती है । पर दुर्भाग्य वहाँ अड़ जाता है जहाँ इन प्रयोजनों को पूरा करने का सही रास्ता नहीं मिलता और फिसलन की ओर प्राणी भटकता, घिसटता चला जाता है । कदाचित लक्ष्य निर्धारण के अवसर पर थोड़ी सतर्कता बरती जा सके तो तुरन्त तनिक से आकर्षक व्यामोह से सहज ही वचा जा सकता है जो जीवन की महान उपलब्धियों से वंचित ही किये रहता है ।

इन्द्रिय सुखों के पीछे मानसिक बचपन लालायित होकर अन्धी दौड़ लगाता है । पतंग लूटने में अति उत्साही लड़के अक्सर छतों से गिरकर हाथ पांव तोड़ते और जान गँवाते देखे जाते हैं । जिनके सामने जीभ का चटोरा-पन, जननेन्द्रिय की खुजली, आलस्य, आराम, सज धज का बचकाना प्रदर्शन, उद्धत अहङ्कार का पोषण, सम्पत्ति संग्रह में बड़प्पन का अनुभव, परिवार में अविवेकपूर्ण मोह, विनोद में अति रुचि जैसे प्रसंग ही सब कुछ हैं उन्हें आत्मिक उत्कर्ष की बात सूझती ही नहीं । सूझती भी हो तो उन्हीं प्रसंगों में इतनी व्यस्तता रहती है कि जीवन लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कुछ पुरुषार्थ कर सकना सम्भव ही नहीं रहता । न उसके लिए समय ही वचता है न मनोयोग लगता है, न साधनों को उसके लिए प्रयुक्त करने का उत्साह उमड़ता है । ऐसी दशा में आत्मोन्नति की हलकी फुलकी कामना, कल्पना, मस्तिष्क के किसी कोने में पड़ी हुई भी हो तो उससे कोई महत्वपूर्ण प्रयोजन सिद्ध नहीं होता । छुट-पुट पूजा पत्री द्वारा आत्मिक प्रगति की महान प्रक्रिया न सफल है और न सम्भव ।

विवेक द्वारा जव आत्मिक और भौतिक उपलब्धियों की तुलना विवे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चना की जाती है तब पता चलता है कि एक तराजू के एक पलड़े में काँच है और दूसरे में कंचन। शरीर इन्द्रिय लिप्सा—वासना और मनोगत लोभ, मोह जन्य तृष्णा जिनके व्यक्तित्व पर आच्छादित हो गई है जिन्हें इन दो के अतिरिक्त और कुछ सूझता ही नहीं उनके लिए आत्मोन्नति का कोई महत्व भले ही न हो, पर जिन्होंने महामानवों के उज्ज्वल चरित्र, महान कर्तृत्व और उनके अनुदानों के प्रति उमगती लोक श्रद्धा का यदि मूल्यांकन किया है तो प्रतीत होगा कि पेट और प्रजनन के लिए मरते खपते रहने वाले नर कीटकों की तुलना में आध्यात्मिक उपलब्धियों का महत्व कितना अधिक है आन्तरिक सन्तोष, उल्लास एवं अजस्र बल की अनुभूति आत्म तत्व की अभिवृद्धि से ही सम्भव है। सोचने की—पढ़ने-लिखने की—परिवार, उपार्जन, शासन एवं अगणित साधनों की जो सुविधायें मनुष्य को मिली हैं वे किसी और प्राणी को नहीं मिलीं, केवल एक ही जीव को इतना मिलना अकारण नहीं है। ईश्वर ने मनुष्य को अपने सहायक सहयोगी के रूप में सृजा है। और आशा की है वह उसकी सृष्टि को सुन्दर, समुन्नत, सुव्यवस्थित बनाने में योगदान करेगा। अन्य प्राणियोंसे अतिरिक्त जो अनुदान उसे मिलेहैं वे मात्र इसी प्रयोजन के लिए हैं। पर यदि उस दिशा से मुँह मोड़ लिया जाय तो अन्तरात्मा ईश्वरीय प्रयोजन को पूरा न करने की आत्म प्रताड़ना से निरन्तर पीड़ित रहेगी वह आन्तरिक विक्षोभ जीवन की हर दिशा में फूटेगा और हर घड़ी क्षुब्ध उद्विग्न, अशान्त एवं खिन्न रहना पड़ेगा इस अन्तः विद्रोह को रोग, शोक, दारिद्र्य, विक्षोभ, क्लेश-कलह, असन्तोष, अनाचार के रूप में फूटता हुआ देखा जा सकता है। प्रचुर सम्पदा, और सुख साधन होते हुये भी मनुष्य तब तक सुखी नहीं रह सकता जब तक वह जीवनलक्ष्य को पहचाने नहीं और अपनी दिशा जीवनोद्देश्य की पूर्ति में निर्धारित न करे।

विवेक का उदय होते ही मनुष्य अपने आपको एक ऐसे चौराहे पर खड़ा पाता है जहाँ उसे दिशा निर्धारण करने की आवश्यकता अनुभव होती है। हवा के साथ उड़ते हुए पत्ते की तरह जहां परिस्थितियाँ ले जाँय वहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जा पहुँचना अपरिपक्वता का चिन्ह है। किधर चलना चाहिए ? क्या करना चाहिए ? क्या बनना और क्या पाना चाहिए ? इन प्रश्नों का हल स्वतन्त्र चेतना से—दूरदर्शी विवेक बुद्धि के साथ किया जाना चाहिए। लोग क्या कहते हैं—और क्या करते हैं यदि इस आधार पर अन्धानुकरण भर करते रहा गया तो समझना चाहिए सुरदुर्लभ अवसर के साथ मखौल करने वालों की पंक्ति में अपने को भी खड़ा किया जा रहा है।

भौतिकवादी जीवन लक्ष्य अपनाने वाला घोर परिश्रम और अनीति आचरण करने के उपरान्त थोड़ी सी सम्पत्ति एवं सत्ता उपार्जित कर सकता है, पर दुर्बुद्धि उसका सदुपयोग नहीं करने देती, फलतः प्राप्त सम्पदाएँ अगणित उलझनें उत्पन्न करती हैं और वे इतनी जटिल होती हैं कि उनका हल करने के असफल प्रयास में अपने को ही गंवा गला देना पड़ता है। इन्द्रिय-लिप्सा बिजलीकी चमक जैसी कोंधती है और भोग को प्राप्त हो विलीन हो जाती है। कामनायें जब तक पूरी न हों तब तक वे बहुत आकर्षक लगती हैं पर जैसे ही वे प्राप्त हुईं कि नीरस लगने लगीं। न कोई वासनायें भोगने से तृप्त हुआ और न किसी को तृष्णा से सन्तोष हुआ। यहएक प्रकार की अग्नियाँ हैं जो केवल मनुष्य को जलाती ही रहती हैं। आग में घी डालने से वह बुझती नहीं भड़कती ही है। विषय भोगों से लेकर वैभव वर्चस्व तक जिसे जितनी अधिकता प्राप्त होगी वह उतना ही अतृप्त और उतना ही अशान्त दिखाई पड़ेगा। लोभ और मोह में अन्धा हुआ मनुष्य प्राप्त करनेमें तो हद तक सफल हो जाता है पर उसे सदुपयोग करना तनिक भी नहीं आता। फलतः सम्पदायें उसे शूलती हूलती रहती हैं और उत्तराधिकारियों के लिए हराम की कमाई के साथ जुड़ी रहने वाली विपत्तियोंकी मेघमाला जैसी सिद्ध होती हैं। जो प्राप्त करना था उससे विमुख रहा गया और पापोंकी भारी पोटली लादकर अन्धकारमय भविष्यकी ओर प्रयाण किया गया—यही है भौतिक जीवनकी उपलब्धि। भूमी कूटने पर मिलता कुछ नहीं—कूटने वाले के हाथ में छाले भर स्मृति चिन्ह रह जाते हैं। वासना और तृष्णा की मृग मरीचिका में भटकने वाले को मिलता कुछ नहीं—सुर दुर्लभ अवसर को कृमि कीटकों की तरह गवाँ देने का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पश्चात्ताप भर शेष रहता है--इतना ही नहीं, साथ ही पाप पोटली के फल भुगतने की चिरकाल तक चलने की नारकीय यन्त्रणा भी गले बँध जाती है।

जीवन सम्पदा का उपयोग दो ही दिशा में होता है एक को तमसाछन्न—भौतिक—आसुरी कहते हैं और दूसरी को ज्योतिर्मय—आत्मिक—दैवी कहा जाता है। इनमें से किसे अपनाया जाय किस मार्ग पर चला जाय इसका निर्णय करनेमें प्रत्येक मनुष्य पूर्णतया स्वतन्त्र है। हाँ, वह अपने निर्णय के भले बुरे परिणाम से नहीं बच सकता, इस सन्दर्भ में वह पराधीन है। विष खाना या अमृत पीना अपनी इच्छा पर निर्भर है पर जब वह कदम उठा लिया गया तो मृत्यु या अमरताकी प्रतिक्रियासे बचा नहीं जा सकता। यदि क्रिया और प्रतिक्रिया की अविच्छिन्नता को समझकर चला जाय तो फिर रुदन क्रन्दन के लिए विवश होने की आवश्यकता न पड़े। सन्मार्ग पर चलकर ही सुखद परिणाम सम्भव है--सद्बुद्धि के सहारे ही आन्तरिक सन्तोष एवं आनन्द मिल सकता है इस आस्था का नाम ही आस्तिकता है। नास्तिकता इस विश्वास का नाम है कि दुर्भावनाओं और दुष्प्रवृत्तियों की रीति-नीति अपनाकर भी उसके दुखद प्रतिफल से बचा जा सकता है। स्वतन्त्र चेतना की प्रशंसा इस बातमें है कि वह देव पथका वरण करे और महान बननेकी आकांक्षा प्रदीप्त करके आत्मवादी रीति-नीति अपनाने के लिए साहसपूर्वक अग्रसर हो। अन्ततः यही निर्णय सर्वोपरि बुद्धिमत्ताका चिन्ह सिद्ध होता है। जिन्होंने देव पथ चुना उन्हीं ने जीवन लक्ष्यकी पूर्ति के साथ जुड़े हुए अजस्र आनन्द का लाभ लिया है।

यह एक भयावह भ्रान्ति है कि जीवन लक्ष्य की पूर्ति छुट-पुट पूजा-पाठ करने या धार्मिक कर्म-काण्डों की लकीर पीट लेने से हो सकती है। साधना उपासना भी एक सीमा तक ही इस प्रयोजन में सहायक हो सकती हैं। स्पष्ट है कि उपासनात्मक उपचारों को 'साधन' कहा जाता है—साध्य नहीं। साध्य है आत्मोत्कर्ष और उसके लिए चिन्तन एवं कर्तृत्व से प्रखर परिष्कृति का समावेश। जीवन लक्ष्य इसी का दूसरा नाम है। स्वर्ग मुक्ति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसी के प्रतिफल हैं आत्म-साक्षात्कार एवं ईश्वर दर्शन इसी मनः स्थिति के नाम हैं। यदि अन्तरंग और बहिरंग व्यक्तित्व को उत्कृष्टता की रीति-नीति के साथ जोड़ा न जा सके तो समझना चाहिए कि भजन-पूजन के सारे क्रिया कलाप बाल-क्रीड़ा जैसे निरर्थक और उपहासास्पद ही सिद्ध होंगे।

आत्मवादी जीवन क्रम का आरम्भ यहाँ से होता है कि हम काय कलेवर और कूटस्थ आत्मा की भिन्नता समझें और उनके स्वार्थों का वर्गीकरण करना सीखें। माया मोहित अज्ञानी जीव अपने आपको—शरीर एवं मन से विनिर्मित काय कलेवर मात्र मानकर चलता है। अपने शुद्ध-बुद्ध रूप को एक प्रकार से पूर्णतया भूला रहता है। इन्द्रियोंकी वासना, मनकी तृष्णायें ही उसे जीवन लक्ष्य प्रतीत होती हैं। आकांक्षायें सम्पत्ति संग्रह, अहङ्कार के पोषण और कुटुम्बियों के व्यामोह में इतनी घुली रहती हैं कि कुछ सोचनेके लिए न मन को उत्साह रहता है न शरीर को अवकाश। जब "अहं" का स्वरूप ही विस्मृत हो गया और कलेवर को ही अपना आपा मान लिया गया तो स्वभावतः शरीर की वासना और मनकी तृष्णा ही जीवन क्रम पर आच्छादित रहेगी। आत्म चिन्तन, आत्म सुधार, आत्म निर्माण, आत्म विकास की बात तब सूझेगी ही नहीं, और सूझेगी भी तो अत्यन्त फूहड़ ढंग से। आत्मवादका अर्थ पूजा-पाठ तक सीमितकर देना—उसमें जीवनके समग्र परिष्कार की आवश्यकता को अविच्छिन्न न मानना एक प्रकार से परले सिरेकी भ्रान्ति है।

शारीरिक स्वस्थता के लिए व्यायाम का भी अपना स्थान है। पर आहार विहारकी मर्यादाओंका उल्लंघन करके कोई चाहे कि हम मात्र व्यायाम के सहारे बलवान बन सकते हैं तो यह उसकी नितान्त भूल है। व्यायाम अपने आप में कितना ही महत्वपूर्ण क्यों न हो पर वह समग्र नहीं है। जप तप एक प्रकार के आध्यात्मिक व्यायाम हैं। वे करने ही चाहिए पर यह न भूल जाना चाहिए कि चिन्तन और कर्त्तव्य की महत्ता आहार-विहार से भी बढ़कर है। यदि उनकी उपेक्षा की गई तो हाथ कुछ भी लगने वाला नहीं है। आज यही हो रहा है। धर्म और अध्यात्म क्षेत्र में मन्त्र, जाप, स्तोत्र, पाठ, तीर्थ-दर्शन, स्नान कथा, कीर्तन—आसन—प्राणायाम जैसे कर्मकाण्डों का महत्व

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आकाश-पाताल जितना बताया जा रहा है और कहा जा रहा रहा है कि इतने भर से ही समस्त आत्मिक और भौतिक मनोकामनायें पूर्ण हो जायेंगी। इस मूर्खतापूर्ण शिक्षा का परिणाम यह हुआ कि लोग आत्मनिर्माण की महान प्रक्रिया को तिलांजलि देकर सस्ते कर्मकाण्डों से आत्म लाभ प्राप्त करने की आशा करने लगे। परिणाम यह हुआ कि आज अध्यात्मवाद की उपलब्धियाँ नगण्य हैं। ५६ लाख साधु बाबाओं से लेकर करोड़ों भजनानन्दी और कर्मकाण्डी लोगों में से उँगलियों पर गिनने जितने भी प्राणवान ऋषि तुल्य व्यक्तित्व दिखाई नहीं पड़ते। व्यायाम करने वाले पहलवान बन जाते हैं—व्यापार करने वाले धनवान—पढ़ने वाले फिर क्या कारण है कि आत्मिक प्रयोजन में संलग्न व्यक्ति समर्था छूँछ दृष्टिगोचर हों? किसान का श्रम धान्यसे कोठे भरता है—मजदूर अपना वेतन लेकर घर में घुसता है। व्यवसायी को अपना लाभ प्रत्यक्ष दीखता है। फिर आत्मवादी को मरने के बाद परलोक में कुछ मिलने की—आशा पर लटकाये रहा जाय, यह कहाँ तक उचित है। वस्तुतः अध्यात्म संसार का सबसे बड़ा लाभदायक व्यापार है। उसे जिसने अपनाया वह महामानव बना—लोकश्रद्धा उस पर निछावर हुई, सम्मान और सफलता उसके पीछे-पीछे छाया की तरह फिरी—इतिहासकारोंने उसके गुणगान करके अपने लेखनी को धन्य बनाया—असंख्य भूले भटकों ने उसके प्रकाश में अपना पथ प्रशस्त किया—स्वयं की अपनी अन्तस्थ दिव्य विभूतियों से इतना ओत प्रोत रहा कि उपलब्ध आनन्द को दोनों हाथों से चारों ओर उलीच कर संपर्क क्षेत्र को चन्दन वन जैसा सुरभित बनाया।

हमें हजार बार समझना चाहिए और लाख बार समझाना चाहिए कि अध्यात्मवाद जीवन नीति को ही कहते हैं। पूजा उपासना उसका शोभा शृंगार मात्र है। इस दिशा में जिनने भी कुछ कहने लायक प्रगति की है उन्होंने अनिवार्य रुपसे आत्म-बोध, आत्मशोधन और आत्मपरिष्कारकी प्रकिया पूरीकी है। हमें यदि खिलवाड़ का ही शौक हो तो मन्त्रों के विधि-विधान में सीमित रह सकते हैं, यदि कुछ पाना हो तो कदम आगे बढ़ानेही होंगे।

क्र०२५। प्र० युग निर्माण योजना, मु० युग निर्माण प्रेस मथुरा। मूल्य ४० पैसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org